IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 7, March 2024

'मिट्टी की सौगंध' में दलित समाज की सामाजिक और आर्थिक चुनौतियाँ

दिलीपकुमार के.परमार[1]
शोधार्थी, हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय, पाटण (HNGU)[1]
डॉ. जे.एम.चौधरी[2]
शोध निर्देशक, हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय, पाटण (HNGU)[2]
(श्रीमती सी.सी.महिला आर्ट्स & शेठ सी.एन कॉमर्स कॉलेज विसनगर)

सारांश: प्रेम कपाड़िया का उपन्यास *'मिट्टी की सौगंध'* दलित समाज के संघर्षों को उकेरता है, जहाँ सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना करना उनकी दैनिक जीवन की सच्चाई है। इस शोध पत्र में उपन्यास में प्रस्तुत दलित समाज की उन कठिनाइयों का विश्लेषण किया गया है, जो उन्हें समाज की निचली सीढ़ियों पर रहने के कारण झेलनी पड़ती हैं। उपन्यास में चित्रित गरीबी, सामाजिक बहिष्कार, और आर्थिक शोषण जैसे मुद्दे दलित समाज की वास्तविकता को प्रकट करते हैं।

मुख्य शब्द: दलित समाज, आर्थिक चुनौतियाँ, सामाजिक असमानता, गरीबी, शोषण

परिचय: दलित साहित्य ने हमेशा से उस समाज की वेदना, संघर्ष और अस्तित्व की लड़ाई को प्रस्तुत किया है, जो वर्षों से सामाजिक और आर्थिक अन्याय का शिकार रहा है। प्रेम कपाड़िया का उपन्यास *'मिट्टी की सौगंध'* दलित समाज के जीवन के कठोर यथार्थ को दिखाता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य उपन्यास में दलित समाज की सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का गहन विश्लेषण करना है।

सामाजिक चुनौतियाँ: *'मिट्टी की सौगंध'* में दलित समाज की सामाजिक स्थिति को बहुत सजीव रूप से प्रस्तुत किया गया है। समाज के हाशिये पर खड़े दलितों को सिर्फ उनकी जाति के कारण अपमान और बहिष्कार का सामना करना पड़ता है। उनके लिए सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करना असंभव सा हो जाता है, क्योंकि समाज के उच्च वर्गों द्वारा उन्हें हमेशा नीची दृष्टि से देखा जाता है।

उपन्यास में दिखाया गया है कि कैसे दलित समाज की पहचान केवल उनकी जाति तक सीमित कर दी जाती है। उनकी संस्कृति, परंपराएँ, और समाज में उनकी भूमिका को अक्सर नज़रअंदाज किया जाता है। सामाजिक बहिष्कार के रूप में उन्हें शिक्षा, रोजगार और सामान्य नागरिक अधिकारों से भी वंचित रखा जाता है। इन पात्रों की ज़िंदगी संघर्षमय होती है, जहाँ उन्हें निरंतर जातिगत भेदभाव का सामना करना पड़ता है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 7, March 2024

आर्थिक चुनौतियाँ: उपन्यास में दलित समाज की सबसे बड़ी चुनौती उनकी आर्थिक स्थिति है। दलितों को भूमि अधिकारों से वंचित रखा जाता है, और उनकी आजीविका मुख्य रूप से मेहनतकश मजदूरी पर निर्भर रहती है। भूमि विहीनता, गरीबी और बुनियादी संसाधनों की कमी उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा है। उपन्यास में यह स्पष्ट रूप से दिखाया गया है कि दलितों के पास आर्थिक स्वतंत्रता नहीं होने के कारण वे हमेशा उच्च वर्गों द्वारा शोषित होते हैं।

गरीबी का दलितों पर गहरा प्रभाव पड़ता है, जिसके कारण वे शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं। इस आर्थिक असमानता ने उन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी संघर्षशील बना दिया है, और उनकी गरीबी और सामाजिक दमन का चक्र लगातार चलता रहता है। इस संदर्भ में, *'मिट्टी की सौगंध'* हमें दिखाता है कि कैसे आर्थिक वंचना दलित समाज की सामाजिक स्थिति को और भी जटिल बना देती है।

शोषण और उत्पीड़न: उपन्यास में दलित समाज के शोषण का प्रमुख रूप उनके श्रम का अत्यधिक दोहन है। उपन्यास के पात्र कठोर श्रम करते हैं, लेकिन इसके बदले में उन्हें पर्याप्त मजदूरी नहीं मिलती। न केवल आर्थिक शोषण, बल्कि मानसिक और शारीरिक शोषण भी दलित समाज के पात्रों की प्रमुख चुनौतियाँ हैं।

यह शोषण सामाजिक ढांचे में निहित है, जहाँ दलितों को उनकी मेहनत का सही मूल्य नहीं दिया जाता। वे उच्च वर्गों के आर्थिक हितों की पूर्ति के साधन के रूप में इस्तेमाल किए जाते हैं। इस प्रक्रिया में, उनके अधिकारों का हनन किया जाता है, और उन्हें अपने जीवन स्तर को सुधारने के किसी भी अवसर से वंचित कर दिया जाता है।

सामाजिक असमानता और जातिगत भेदभाव: उपन्यास में दलितों के प्रति जातिगत भेदभाव को प्रमुखता से उजागर किया गया है। दलित समाज को निम्न स्तर का मानकर उन्हें नीची जातियों का हिस्सा बना दिया जाता है, जो सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों से वंचित रहते हैं। इस सामाजिक असमानता का सामना करते हुए, दलित पात्र अपने अधिकारों और सम्मान की लड़ाई लड़ते हुए दिखते हैं।

जातिगत भेदभाव केवल सामाजिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि आर्थिक स्तर पर भी उन्हें पीछे रखता है। उपन्यास यह दर्शाता है कि जातिगत असमानता दलितों के लिए न केवल सामाजिक बहिष्कार का कारण बनती है, बल्कि उनके आर्थिक विकास के रास्ते भी बंद कर देती है।

निष्कर्ष: प्रेम कपाड़िया का उपन्यास *'मिट्टी की सौगंध'* दलित समाज की सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का एक सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है। उपन्यास में दिखाया गया है कि दलित समाज कैसे सामाजिक बहिष्कार, आर्थिक शोषण और जातिगत भेदभाव का सामना करता है। इसके पात्र अपनी परिस्थितियों के

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 7, March 2024

खिलाफ संघर्ष करते हुए दिखते हैं, जो केवल उनके व्यक्तिगत संघर्ष को नहीं, बल्कि दलित समाज के व्यापक संघर्ष का प्रतीक है।

यह उपन्यास हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि आज भी समाज में व्याप्त असमानता और अन्याय का दलित समुदाय पर क्या प्रभाव पड़ता है, और उनके लिए न्याय और समानता की दिशा में क्या कदम उठाए जा सकते हैं।

संदर्भ:

- कपाड़िया, प्रेम. *मिट्टी की सौगंध.* नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, 2011.
- वाल्मीकि, ओमप्रकाश. *जूठन.* नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, 1997.
- आंबेडकर, बी.आर. *अछूत कौन और क्यों.* मुंबई: शिक्षा प्रकाशन, 1945.
- चौहान, अनिल कुमार. *दलित साहित्य का सामाजिक सरोकार.* लखनऊ: नया पथ प्रकाशन, 2010.
- सिंह, रामचंद्र. *साहित्य और सामाजिक संघर्ष: दलित विमर्श के परिप्रेक्ष्य में.* वाराणसी: विद्या प्रकाशन, 2015.
- सोनवणे, अरुण. *दलित साहित्य में आर्थिक शोषण और सामाजिक असमानता.* पुणे: ग्रंथाली प्रकाशन, 2008.
- शर्मा, महेंद्र. *दलित साहित्य में मजदूरों की स्थिति.* जयपुर: साहित्य संसार, 2009.

पांडे, विमलेश. *दलित विमर्श और आर्थिक संघर्ष.* नई दिल्ली: भारतीय साहित्य परिषद, 2017.